देवी ध्यानम् मन्त्र

महादुर्गा ध्यानम्

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कंधस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रदरालिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

मैं उन देवी दुर्गा की आराधना करता हूँ,
जो त्रिनेत्रा हैं, जो चन्द्रमा को धारण किए हुए हैं,
विद्युत् के समान प्रभामयी हैं, जो मृगपति, सिंह पर सवार हैं,
हाथों में चमकती हुई तलवार और ढाल से सुसज्जित कन्याएँ
जिनकी सेवा में उपस्थित रहती हैं, और
अपने हाथों में
चक्र, गदा, तलवार, ढाल तथा धनुष-बाण धारण किए हुए,
जो भयंकर प्रतीत होती हैं।

महाकाली ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्शूलं भुशुंडीं शिरः
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हंतुं मधुं कैटभम्॥

मैं देवी महाकालिका की वन्दना करता हूँ,
जो अपने हाथों में तलवार, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिघ [भाला],
शूल, भुशुण्डि [एक अस्त्र], शिर [मुण्ड] और शंख धारण करती हैं;
जो त्रिनयना हैं; जिनके सर्वांग आभूषणों से विभूषित हैं
और जिनकी कान्ति नीलमणि के समान तेजोमय है;
जिनके दस मुख और दस पाद हैं
और जब भगवान श्रीविष्णु निद्रित थे, तब जिनसे
ब्रह्मा जी ने मधु और कैटभ नामक राक्षसों का वध करने के लिए
प्रार्थना की थी।

महालक्ष्मी ध्यानम्

अक्षस्रक्परशूगदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुंडिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घंटां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

मैं उन भगवती महालक्ष्मी की वन्दना करता हूँ,
जो महिषासुर का मर्दन [वध] करने वाली हैं,
जिनकी प्रभा मूँगे की भाँति कान्तिमय है।
कमल पर आसीन, भगवती महालक्ष्मी अपने हाथों में जपमाला, परशु, गदा, बाण,
वज्र, पद्म, धनुष, जलपात्र, दण्ड, भाला, खड्ग, ढाल, शंख, घण्टा, मधुपात्र,
त्रिशूल, पाश और सुदर्शन चक्र धारण किए हुए हैं।

महासरस्वती ध्यानम्

घंटाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनांतविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुंभादिदैत्यार्दिनीम् ॥

अब, मैं उन देवी सरस्वती का पूजन करता हूँ,
जो अपने करकमलों में घण्टा, त्रिशूल, हल, शंख, गदा,
चक्र, धनुष और बाण धारण करती हैं;
जिनकी प्रभा निरभ्र आकाश में द्युतिमान चन्द्रमा के समान है,
जिनका उद्भव गौरी की देह से हुआ है, जो महापूर्वा हैं,
जो तीनों लोकों की आधार हैं, और शुम्भ आदि दैत्यों का संहार करने वाली हैं।

©२०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।